कर्मातीत अवस्था के 12 गुह्य सूत्र

➢➢ कर्मातीत अवस्था की परिभाषा

➳ _ ➳ कर्म करते हुए कर्म के प्रभाव से परे

➢➢ साक्षी भाव

➳ _ ➳ दर्शक बनकर रहना

→ और परदे पर दृश्य देखना

➳ _ ➳ यह साधना भी है

→ और परिणाम भी है बहुत सी साध्नाओं का

➳ _ ➳ यह अध्यात्म की सर्वोच्च अवस्था है

➳ _ ➳ पास्ट को भी साक्षी होकर देखने से

→ पुरानी यादो का फ़ोर्स कम हो जाता है

➢➢ उपराम स्थिति

➳ _ ➳ ऊपर से बैठकर नीचे देखिये

➢➢ अहल अडोल निर्विघन स्थिति

➳ _ ➳ विघन तो हैं

→ पर यह अनुभव नहीं हो रहा है की यह विघन है

- सब कुछ एक खेल नज़र आ रहा है

➳ _ ➳ Remain Stable

→ In Any Difficult Situation

➳ _ ➳ मस्त रहो मस्ती में

→ आग लगे बस्ती में

➳ _ ➳ कुछ -ve संकल्प भी चाहिए

→ I Don't Care

→ मुझे कुछ लेना देना नहीं

→ मुझे कुछ फर्क नहीं पड़ता

→ ये कोई नयी बात है क्या

➳ _ ➳ बेशक ढोंग करो की

→ आपको कोई फर्क नहीं पड़ा

➳ _ ➳ चिकना घड़ा बन जाओ

➢➢ कर्म बंधन मुक्त

➳ _ ➳ सेवा करने के बाद

→ अपनी सेवाओं का बखान न करें

➢➢ न्यारी अवस्था / Detached

➳ _ ➳ Attachment केवल ज्ञान से हो... सुनाने वाले से नहीं

→ क्योंकि अगर ज्ञान सुनाने वाली की कमी पता चल जाए तो

■ फिर ज्ञान से भी वैराग आ जाएगा

➢➢ निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी

➢➢ निर्लेप

➢➢ नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा

➳ _ ➳ मोह को छिपाया जाता है... ज्ञान को इस तरह से misuse करके

→ तोड़ निभा रहे हैं

→ युक्तियुक्त होकर चल रहे हैं

→ सेवा के सहयोगी हैं

→ सेवा के लिए सम्बन्ध है

➢➢ अकर्ता / अभोक्ता / असोचता

➳ _ ➳ कर्म करते हुए भी ऐसा अनुभव करना

→ जैसे मैंने कुछ किया ही नहीं

➢➢ कर्मेन्द्रियजीत

➳ _ ➳ इन्द्रियों के रसो से मुक्त

➢➢ प्रक्रतिजीत

➳ _ ➳ रोजाना पांचो तत्वों की सेवा कीजिये

➢➢ फ़रिश्ता